फोफलें हो जाते हैं। बकरी को तेज बुखार होता है। मुँह सें लार गिरते रहता है। इस रोग से बचने के लिए बकरी को और बकरियों से अलग कर देना चाहिए तथा छालों को लाल दवा से धुलाई करनी चाहिए।

5. चेचक– यह भी एक संक्रामक रोग है। बीमारी होने पर बकरी खाना छोड़ देती है। जाँघ के भीतरी भाग, थन एंव वॉट में फोफले हो जाते हैं। इस रोग के होने पर बकरी को अलग कर देना चाहिए और अविलम्ब पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए।

6. छेड़ा– यह भी बकरी के लिए अति सामान्य रोग है। इसमें बकरी को पतला पैखाना होता है। यदि पैखाना के चलते शरीर का काफी पानी निकल गया तो बकरी मर भी सकती है। अत: इस रोग के लक्षण आने पर तुरन्त पशु चिकित्सक को बुला कर उपचार करवाना चाहिए।

7. कोकसिडियोसीस– यह रोगों सामान्यत: छौनो में होती है। इसमें पतला पैखाना होता है। यदि समय पर ध्यान नहीं दिया गया तो छौने मर भी सकते हैं।

बकरीयों को बीमारी से बचाव के लिए प्रतिवर्ष निम्नलिखित टीकाकरण कराना चाहिए –

बीमारी का नाम	पहला टीका	दूसरा टीका	सलाना टीकाकरण
खुरहा (FMD)	3 महीने की उम्र	पहले टीके के 1 महीने बाद	सलाना टीकाकरण
पी०पी०आर० (PPR)	4 महीने की उम्र	जरूरी नहीं	सलाना टीकाकरण
इन्टेरोटॉक्सीमिया	3 से 4 महीने की उम्र	पहले टीके के 1 महीने बाद	सलाना टीकाकरण
चेचक	3 से 5 महीने की उम्र	पहले टीके के 1 महीने बाद	सलाना टीकाकरण

आर्थिक विश्लेषण: यदि बकरी पालक 10 व्यस्क ब्लैक बंगाल और एक ब्लैक बंगाल बकरा से व्यवसाय शुरू करता है तो उसे प्रति वर्ष 20,000–25,000/ रूपये की आय प्राप्त होती है। यदि ब्लैक बंगाल बकरे के स्थान पर बीटल बकरे का उपयोग कर संकर नस्ल पैदा करता है तो उसे 30,000–35,000/ रूपये प्रति वर्ष की आमदनी होती है।

-:आलेख:-

लालबाबू सिंह, मारूफ अहमद, डी.के. सिंह 'द्रोण', शंकर टुडू, दिनेश महतो एवं रविन्द्र मोहन मिश्रा

Concept & Editing : Prof. B.N. Singh, Director Research
Financial support: AICRP on Goat (ICAR)

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

निदेशक अनुसंधान, अनुसंधान निदेशालय
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, काँके, राँची - 834006
दूरभाष: 0651-2450610(का.), फैक्स: 0651-2451011/2450850 मो.: 9431958566
E-mail:dr_bau@rediffmail.com

Birsa Agricultural University, Technology Bulletin-49
FEBRUARY-2011

झारखंड में बकरी पालन की उन्नत विधि

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बकरी पालन का विशेष महत्व है। यह ग्रामीण क्षेत्र के सीमांत–लघु तथा भूमिहीन कृषक के आर्थिक स्रोत का महत्वपूर्ण साधन है। बकरी की प्रजनन क्षमता अन्य पशुओं की तुलना में अधिक है तथा हर क्षेत्रों में सभी जाति एवं सम्प्रदाय के लोगों द्वारा बकरी पालन किया जाता है। बकरी पालन कम लागत एवं साधारण रख–रखाव में सम्भव है। झारखंड मे माँस उत्पादन हेतु बकरी पालन लाभदायक है। इस क्षेत्र में पायी जाने वाली बकरियाँ अल्प आयु में वयस्क होकर 2 वर्ष में कम से कम 3 बार बच्चों को जन्म देती हैं तथा एक बार में 2 से 3 बच्चों को जन्म देती हैं। बकरियों से माँस, दूध, खाल एवं रोआँ के अतिरिक्त इसके मल–मूत्र से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। बकरियाँ प्राय: चारागाह पर निर्भर रहती हैं तथा झाडियों, घास–पात एवं पेड़ के पत्तों को खाकर हम लोंगों के लिए अति पौष्टिक माँस तथा दूध उत्पादित करती हैं।

बकरी की नस्लें: हमारे देश में बकरियों की 20 नस्लें अलग–अलग राज्यों में पायी जाती हैं। झारखण्ड प्रदेश में केवल एक नस्ल ब्लैक बंगाल (Black Bengal) पाई जाती है।

ब्लैक बंगाल: यह एक छोटे कद वाली बकरी की नस्ल है जो मुख्य रूप से मांस के लिए पाली जाती है। यह काले, भूरे और सफेद रंगों में पायी जाती हैं। यह माँस की गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है।

बीटल: यह बड़े आकार की बकरी की नस्ल है जो दूध व माँस के लिए मशहूर है। यह पंजाब राज्य के अमृतसर, गुरदासपुर और लुधियाना जिलो में पायी जाती है। इस नस्ल की बकरियों का कान बहुत लम्बा होता है, थन विकसित होते हैं। यह मुख्य रूप से काले एवं भूरे रंगों में पायी जाती है। कभी–कभी काले व भूरे रंगों पर सफेद धब्बे भी पाये जाते है ।

संकर नस्ल (ब्लैक बंगाल × बीटल बकरा): ब्लैक बंगाल बकरी को बीटल नस्ल के बकरे से पाल दिलाने पर प्रथम पीढ़ी के जो छौने प्राप्त होते हैं, उनकी बढ़वार तेजी से होती है और एक वर्ष में 20–22 कि.ग्रा. वजन हो जाता है जिससे किसानों को ज्यादा आय प्राप्त होती है। इसके साथ–साथ घरेलू उपयोग के लिए दूध की भी प्राप्ति होती है।